संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से

# संगीत नाटक अकादेमी

द्वारा संचालित परियोजना

# 'अमूर्त सांस्कृतिक संपदा'

के अंतर्गत वर्ष 2015-16 में स्वीकृत परियोजना

# "दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रों के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन"

(प्रथम रिपोर्ट)

अंकिता चौहान

# विषय सूची

1- आभार

2- मिट्टी कला और कलाकार

3- मिट्टी और जीवन

4- दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (उत्तम नगर, लोनी) का परिचय

5- मिट्टी कला और कलाकारों की चुनौतियाँ

6- परियोजना का उद्देश्य

7- आधुनिक मिट्टी के बर्तन की तस्वीरें

8- मिट्टी कला से जुड़े राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की कुछ तस्वीरें

# आभार

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से संगीत नाटक अकादमी द्वारा संचालित अमूर्त सांस्कृतिक संपदा परियोजना (ICH) 2015-16 के अंतर्गत मुझे 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन' विषय पर कार्य करने का अवसर मिला। इस योजना के अंतर्गत मैंने दिल्ली के उत्तम नगर और एनसीआर के लोनी इलाके का निरीक्षण किया। वहां के लोगों से मिलकर बात की। मिट्टी के कलाकार देशभर में सीमित संसाधनों में अपनी कला का विस्तार करने में लगे हुए हैं। मिट्टी के खिलौने, बर्तन, सजावट के सामान, रोजमर्रा के प्रयोग के सामान आदि बनाकर यह कलाकार अपनी जीविका चलाते हैं। इन कलाकारों को इनकी अनोखी कला के लिए पूरे दुनिया में सम्मान तो मिलता है लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति बहुत बुरी है। शहरों में मिट्टी कला को जीवित रखना बहुत मुश्किल है। मिट्टी खरीदकर उसे आँवा में पकाना आसान नहीं है। सामान तैयार होने के बाद वितरण में तमाम समस्याएं सामने आती हैं। कच्चा माल होने के कारण माल टूटने-फूटने का डर बहुत ज्यादा होता है और कई बार भारी नुकसान उठाना पड़ता है। भविष्य में इन कलाकारों के लिए आधुनिक सुविधाओं से जोड़ने सरकार की जिम्मेदारी है। मिट्टी कला सिर्फ जीविका का साधन ही नहीं बल्कि हमारी परंपरा और संस्कृति का हिस्सा हैं। इस योजना के अंतर्गत अपने एक सहयोगी के साथ लोगों से मिलकर बात कर की। यह मेरी पहली रिपोर्ट है जिसमें मिट्टी कला, मिट्टी के बर्तनों की उपयोगिता और उत्तम नगर तथा लोनी का परिचय है जहाँ पर भारी मात्रा में मिट्टी के बर्तनों का निर्माण होता है।

अगली रिपोर्ट में मैं विश्व विख्यात उत्तम नगर, लोनी आदि क्षेत्रों में रहने वाले कलाकारों का परिचय और साक्षात्कार उपलब्ध करुँगी। संगीत नाटक अकादेमी का बहुत-बहुत आभार।

-अंकिता चौहान

# मिट्टी कला का परिचय

मिट्टी जीवन दायिनी है । मनुष्य ने अपने विकास क्रम में सबसे पहले मिट्टी के बर्तनों को बनाकर अपनी बौद्धिक क्षमता का परिचय दिया। कुंभकारों को दुनिया का पहला इंजीनियरिंग कहा जाता है। मिट्टी के बर्तनों द्वारा ही मानव ने सबसे पहले खाना पकाकर खाना सीखा। इससे पहले कच्चा खाने की परंपरा थी। मिट्टी की महिमा तो वेदों-पुराणों में भी कही गई है। मिट्टी की सुगंध तन-मन को सुगंधित करती है। मिट्टी के बर्तन, खिलौने, दिए सुख, सौभाग्य और समृद्धि का कारक भी माना जाता है। भारतीय वास्तु शास्त्र  में मिट्टी को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। चिंतक मानते हैं कि मिट्टी के वस्तुओं का प्रयोग जीवन में सकारात्मक ऊर्जा लाता है।

मिट्टी जीवन है और अंतत: हम सब मिट्टी हैं। देश के मनीषियों, चिंतकों और समाजशास्त्रियों ने मिट्टी की महिमा का गुणगान कर जीवन दर्शन से जोड़ा है। कबीर कहते हैं-

“माटी कहे कुम्हार से, तु क्या रोंदे मोय
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौदूंगी तोय।”

इतना ही नहीं एक शायर ने मिट्टी के बर्तनों को हाशिए के समाज से जोड़ा है-

“घर आकर माँ बाप बहुत रोये अकेले में,
मिट्टी के खिलौने भी सस्ते ना थे मेले में।”

कलाएँ बाज़ार और समय के अनुसार अपना स्वरुप बदलती रहती हैं लेकिन मिट्टी कला ने कभी व्यवसाय को स्वीकार नहीं किया। यही कारण है कि यह कला आज सबसे अधिक संघर्ष कर रही है। आज पूरे देश के कुम्भकारों की की संख्या लगभग तीन करोड़ है जिनमें से लगभग एक करोड़ लोग आज भी मिट्टी के बर्तन बनाते हैं। दरअसल मिट्टी कला को केवल दिए, बर्तन और खिलौने

तक देखना केवल उसके बाहरी त्वचा को देखना है अंदर तो 'ज्यों ज्यों बूढ़े स्याम रंग, त्यों त्यों उज्वल होय' वाली स्थिति है। दिल्ली के उत्तम नगर में स्थिति कुम्भकार कॉलोनी भारत के मिट्टी कला को चिन्हित करने वाला एक ऐसा स्थान है जहाँ कई कला के कई प्रत्येक सम्मानित सम्मानों से सम्मानित कलाकार रहते हैं। यह भारत का ऐसा इलाका हैं जहाँ के कलाकार अपनी कला के लिए पूरी दुनिया में जाने जाते हैं। मिट्टी के खिलौने के प्रति तो बच्चों का लगाव बचपन से ही होता है। प्राचीन समय में मौर्यकाल और गुप्तकाल युग में आग में पकाकर बनाए मिट्टी के खिलौने आज भी खुदाई में मिलते हैं। आज के दौर में मिट्टी के बर्तनों को फैशन के तौर पर घर की सजावट के लिए  प्रयोग किया जाता है। मिट्टी कला अन्य कलाओं से अधिक आकर्षित करने वाली और ऊर्जावान होती है। भारत के विभिन्न हिस्सों में तरह-तरह आकृतियों और आकारों वाले मिट्टी के बर्तन, खिलौने, सजावट के समान आदि मिलते हैं। घर, किचन, बालकनी के खाली पड़े कोने में मिट्टी की कलाकृतियों को रखकर उनकी शोभा बढ़ायी जाती है।

सिन्धु घाटी की सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में एक है। इस युग में मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए चाक का प्रयोग किया जाता था। बर्तनों पर की अद्भुत नक्काशी से पता चलता है कि उस अभावग्रस्त युग में भी कुम्हारों की कलात्मक उपलब्धियां क्या थी। इस युग में बर्तनों के साथ-साथ खिलौनों के अवशेष मिले है। विश्व की सबसे प्राचीन कलाओं में होने के बाद भी आर्थिक अभाव और आधुनिकता के साथ न चल पाने के कारण यह कला खत्म होने लगी।

मिट्टी कला और कलाकार पूरी दुनिया में पाए जाते हैं। भारत के प्रत्येक शहर में कुंभकारों का एक कोना जरूर होता है जहां वह अपनी कला के माध्यम से अपनी प्रतिभा का परिचय देते हैं। भारत में यह कला भारतीय संस्कृति और परंपरा में रची-बसी है। तीज-त्योहार, पारिवारिक, सामाजिक उत्सवों में मिट्टी के बर्तनों का उपयोग अनिवार्य होता है। दीपावली और दुर्गा पूजा की कल्पना तो इन कलाकारों के बिना की नहीं जा सकती। मुंबई का अंतरराष्ट्रीय ‘गणेश उत्सव’ में इन मिट्टी के कलाकारों की बड़ी भूमिका होती है।

मिट्टी बहुत क्षमतावान होती है। वह अपने अंदर दुनिया का सारा मल, कूड़ा समेट कर शुद्ध कर देती है। धरती के अंदर के जो दबता है मिट्टी बन जाता है। भारत मिट्टी की अमूर्त सम्पदा फैली हुई हैं। मिट्टी चाहे किसी भी किस्म की हो उसे मिट्टी कला के किसी भी रूप में ढ़ालने से पहले साफ कर लेना चाहिए। कम से कम तीन फुट अंदर की मिट्टी ही बर्तनों के लिए शुद्ध मानी जाती है। भारत में कई प्रकार की मिट्टी पाई जाती है। जलोढ़ मिट्टी उत्तर भारत के पश्चिम से लेकर पंजाब के उत्तर तक उत्तरी पायी जाती है। गंगा नदी  के डेल्टा भूमि तक बिखरा हुआ है। काली मिट्टी मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए उपयोग की जाती है। इसको 'रेगड़' 'काली कपास' भी कहा जाता है। मिट्टी भारत के कछारी भागों में मुख्य रूप पायी जाती है। से पाई जाती है। कपास की खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होने के कारण इसे 'काली कपास मिट्टी' अथवा 'कपासी मृदा' भी कहा जाता है। इस मिट्टी की जल धारण क्षमता अधिक है। यही कारण है कि यह मिट्टी शुष्क कृषि के लिए अनुकूल है। मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग गर्मियों के दिनों में अधिक होता है। घड़े, सुराही आदि का प्रयोग इन दिनों बढ़ जाता है। आज के युग में जब आधुनिक संसाधनों का प्रयोग कर हमनें सैकड़ों बीमारियाँ पैदा कर ली हैं ऐसे मिट्टी के कुल्हड़, लस्सी कटोरी, जग, कुकर आदि का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। इन बर्तनों से जीवन शैली में सुधार आता है और स्वास्थ्य ठीक रहता है।

कुंभकारों को प्रजापति भी कहा जाता है। प्रजापति के "ति" का अर्थ 'अति विशिष्ट' है। ब्रम्हांड की रचना में दो चीजें बहुत महत्वपूर्ण है एक उर्जा दूसरा पदार्थ हमारा शरीर पदार्थ से निर्मित है और आत्मा ऊर्जा है पदार्थ जल अग्नि वायु आकाश पृथ्वी का समावेश होता है संसार में शव यानी मृत देह ही सत है यदि शिव शब्द के पहले 'ति"की मात्रा लगा दें तो सबसे शिव बन जाता है और यदि इसी मात्रा को सत के पीछे लगा दिया जाए तो सती बन जाता है यानी प्रजापति शिव पदार्थ और शक्ति का प्रतीक है शिव और सती का आदि अनादि काल से एकल रूप है तथा पुरुष और प्रकृति की समानता का प्रतीक भी है अर्थात इस संसार में न केवल पुरुष का और न केवल स्त्री का वर्चस्व है अर्थात दोनों ही समान है।

संसार में पदार्थ यानी पंचतत्व योनियों को प्रभावित करती है योनियां जैसे मनुष्य योनि पेड़-पौधे योनि पशु-पक्षी योनि जीव जंतु योनि योनियों का अर्थ है प्रकटीकरण जीव अपने कर्म के अनुसार विभिन्न योनियों में जन्म लेता है और मनुष्य योनि में आकर मोक्ष को प्राप्त करता है संसार में सिर्फ प्रजापति समाज को ही आदि अनादि काल से पदार्थ यानी पंच तत्व के मिश्रण के माध्यम से मिट्टी के बर्तन बनाकर ऊर्जा यानी अग्नि पर शुद्ध करके मनुष्य के आचार विचार को धार्मिक रुप के साथ-साथ आहार के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करने में बहुत बड़ा सहयोग करता है। इस बात की सत्यता सतयुग के प्रथम चरण में शिव के साथ मां पार्वती ने संसार को सत्यता की कसौटी के लिए मां श्रीयादे के रूप में प्रजापति कुम्हार के घर में जन्म लिया और मिट्टी के बर्तनों पदार्थ और शक्ति के द्वारा प्रहलाद को ज्ञान दिया और परिणाम स्वरुप धरती पर सनातन की पुनः स्थापना हुई और आज भी सनातन जिंदा है।

वर्तमान में कुम्हारों के जीवन और उनकी कला के सामने तमाम चुनौतियाँ सामने हैं। हजारों वर्ष पूर्व कुम्भकार जाति के पूर्वजों ने जिन साधनों से उस कला का विकास किया था आज भी  भी आर्थिक अभाव में वहीं की वहीं है। फैशन के रूप में इसे व्यवसाय आज थोड़ा बहुत चलता है लेकिन मुख्य रूप से प्याली, सुराही, घड़ा, चिलम आदि प्रचलन में अधिक हैं।वर्तमान में एक कुम्हार प्रतिदिन 100 से 200  रूपये कमा लेता है। मूर्तिकार कुम्हारों की आजीविका हिन्दुओं के धार्मिक उत्सवों पर ही निर्भर है। दशहरा, दीपावली, बसंत पंचमी, गणेश पूजा एवं विश्वकर्मा पूजा आदि के अवसर पर मूर्तियों की मांग ज्यादा होती है। मेले त्योहार में इनके द्वारा निर्मित खिलौना भी खूब बिकता है। दीपावली के पूर्व इनका व्यवसाय बढ़ जाती है, रात-रात भर ये लक्ष्मी-गणेश की प्रतिमाएं बनाते रहते है। हिन्दु परिवार में दीपावली के दिन लक्ष्मी-गणेश की पूजा होती है। दीपावली दीपों का पर्व हैं किंतु आज मिट्टी के दीप की जगह बिजली के छोटे-छोटे बल्बों और मोमबतियों ही प्रयोग होता है। तेल के आसमान छूते दाम तो मिट्टी के दीप जलाने की परम्परा लगभग समाप्त ही होता जा रहा है। किंतु सामाजिक आर्थिक स्थिति निम्नतम है जब कि श्रम सबसे

अधिक इन्हीं के हिस्से पड़ा है। यह तो भारतीय संदर्भ है। पूरे विश्व में मिट्टी कला का इतिहस बहुत प्राचीन है। मिट्टी के बर्तन प्रयोग में कब आए इसकी कोई निश्चित तिथि नहीं है लेकिन इतिहास बताता है कि यह कला तेरह हज़ार वर्ष पुरानी है। इंग्लैड, बेल्जियम और जर्मनी की खुदाई से पता चलता है कि हिमनदी के समय से ही में मिट्टी के बर्तन हाथ से बनाकर पकाए जाते थे। इन सूत्रों से सिद्ध होता है कि 1,500 ई0 पू0 से ही मिट्टी के बरतन चले आ रहे हैं।

विकिपीडिया पर मिट्टी कला विकास का तिथिवार विवरण इस प्रकार है-

| **विधि** | **विकास काल** | **प्रथम विकास वाले देश** |
|---|---|---|
| चिकनी मिट्टी का प्रयोग | 15,000 ई0 पू0 | विश्व में सर्वत्र |
| मिट्टी के बर्तन का फूँका जाना | 15,000 से 13,000 | |
| काचित बरतन उद्योग | 5,000 ई0 पू0 | मिस्र (2,700 ई0 पू0, चीन) |
| नीली तथा हरी चमक | 3,500 ई0 पू0 | 1. मिस्र ; 2. बेबिलोनिया ; 3. एसीरिया ; 4. मीडिया की राजधानी एक्लिआताना ; 5. पर्सिया |
| कुम्हार का चाक | 3,000 ई0 पू0 या और भी अधिक | विश्व में स्वतंत्र रूप से सर्वत्र |
| ईटं, खपरैल, लाल मिट्टी के पाषाण बरतन नल तथा स्नान कुंड | 800 ई0 पू0 | रोम तथा उसके उपनिवेश |
| लोहा, मैंगनीज, मैग्नीशियम तथा लकड़ी के कोयले का कलेवर में उपयोग | 800 ई0 पू0 | रोम तथा उसके उपनिवेश |
| कठोर पोर्सिलेन (अपार दर्शी श्वेत) | 185 ई0 पू0 | चीन |
| कठोर पोर्सिलेन (पारभासी) | 581 ई0, 1708 ई0 | 1.चीन ; 2. यूरोप, जर्मनी, वॉटशर |
| मृदु पोर्सिलेन, पारभासी | 1670 ई0, 1693ई0 | 1. इंग्लैंड (ड्वाइट) ; 2. फ्रांस (चिकैनियन) |
| अस्थि पोर्सिलेन (पारभासी) | 18 वीं शताब्दी | इग्लैंड (शेल्टनका एस्टबरी) |

| | | |
|---|---|---|
| स्लिप कस्टिग प्रोसेस | - | इंग्लैंड |
| ट्रांसफर डेकोरेशन | 1752 ई0 | इंग्लैंड (जॉन सैड्लर तथा गाय् ग्रीन) |
| प्लास्टर साँचे | 18 वीं शती | इंग्लैंड |
| माजोंलिका | 12 वीं शती | मजोलिका द्वीप स्पेन (17 वीं शती, इंग्लैंड) |
| फेयेंस | 16 वीं शती | डच |
| लवण काचित नल | 12 वीं शती | जर्मनी (17 वीं शती, इंग्लैंड) |
| उच्च ताप शंकु (Seger Cone) | 19 वीं शती | जर्मनी (एच0 ए0 सेगर) |
| मैग्ना पोर्सिलेना | 1952 ई0 | जापान (सैगो चाइना) |

भारत में मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा सभ्यता की खुदाई में सिंधु घाटी (3,000 ईसा पूर्व) काल के मिट्टी से आरंभ हुए मिट्टी कला अब काफी विकसित हो चुकी है। वर्तमान में राजस्थान, दक्षिण भारत, उत्तर प्रदेश के सभी जिले आदि में मिट्टी के बर्तनों का निर्माण होता है। उत्तर प्रदेश के अंबेडकर नगर, आगरा, अलीगढ़, आजमगढ़, उन्नाव, इटावा,एटा, कन्नौज, कौशाम्बी, कुशीनगर, झांसी,जौनपुर, देवरिया, प्रतापगढ़, बलिया, बस्ती, बाराबंकी, मेरठ, रामपुर, रायबरेली, वाराणसी, बस्ती आदि शहरों में मिट्टी के बर्तन बनते हैं। इनके अलावा उत्तर प्रदेश के खुर्जा, सरायमीर, रानी की सराय मिट्टी कलाकारों और कला का गढ़ माने जाते हैं। राजस्थान के अजमेर , अलवर, भरतपुर, बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर जिले तथा गुजरात के अहमदाबाद, कच्छ, खेड़ा ,जूनागढ़, पोरबंदर, भावनगर, राजकोट, वडोदरा, सूरत जिलों में मिट्टी कला काफी विकसित है। इस जिलों में मिट्टी के कलाकार भारी मात्रा में काम करते हैं।

# मिट्टी कला और जीवन

मिट्टी और स्वास्थ्य का संबंध तो सभी धर्मों के ग्रन्थों में मिलता है। इसके प्रयोग से शरीर निरोग रहता है। मिट्टी के बर्तनों में खाना बनाने से उरजी ऊर्जा और प्रोटीन नष्ट नहीं होते। उसमें मिलने वाले वाए खनिज तत्व भी पूरे के पूरे मिल जाते हैं। मिट्टी के बर्तनों के प्रयोग से फायदे-

- मिट्टी बर्तनों में धातु का मिश्रण और केमिकल नहीं होता है। साथ ही खाद्य पदार्थों को नुकसान पहुंचाने वाला सीसा भी मिट्टी के बर्तनों में नहीं पाया जाता है। इसके अलावा हानिकारक कैडमियम तत्व भी मिट्टी  में नहीं होते हैं।
- मिट्टी बर्तनों में प्लास्टिक, डाई, माइका जैसे जहरीले तत्व नहीं होते हैं। मिट्टी के बर्तनों में शरीर को ऊर्जावान और बीमारी मुक्त बनाने वाले पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नेशियम, फासफोरस जैसे प्राकृतिक खनिज तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके प्रयोग से प्रकृति मानव जीवन के साथ ही पर्यावरण पर भी कोई नकारात्मक असर नहीं पड़ता है।
- मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाने से बर्तन के रासायनिक तत्व खाने में मिलने पर उसे दूषित नहीं करते जैसे- धातु के बर्तन में पकाने से खाने में धातु मिल जाती है और शरीर को नुकसान पहुंचाती है।
- मिट्टी के बर्तनों में भाप का उपयोग खाना बनाने में ठीक से नियंत्रित होता है। इससे खाने के पोषक तत्व नष्ट नहीं होते। साथ ही घी, तेल का उपयोग भी बहुत कम होता है। खाना अपने तेल व रस से ही पकता है।

- इन बर्तनों में खाना धीरे-धीरे और समान रूप से पकता है और पोषक तत्व नष्ट नहीं होते। आजकल के बर्तनों में आंच समान रूप से नहीं लगती है, बस भोजन जल्दी पक जाता है।
- मिट्टी के बर्तनों में पके खाने में मसाले आदि ठीक से पक जाते हैं और खाना काफी समय तक गरम बना रहता है। इस प्रकार बिजली की भी बचत होती है।

**मिट्टी के चिकित्सीय गुण**

- मिट्टी के अंदर ज़हर खीचने की क्षमता होती है। वह विषैले तत्व को शरीर से बाहर कर देता है।
- ये शरीर के अंदर के पुराने से पुराने मल को घुलाती है और बाहर निकालती है।
- मिट्टी शरीर के ज़हरीले पदार्थों को बाहर खींच लेती है।
- त्वचा के रोग जैसे फोड़े-फुंसी सूजन, दर्द आदि होने पर मिट्टी काफ़ी लाभकारी साबित होती है।
- मिट्टी जलन, स्राव और तनाव आदि को समाप्त करती है।
- शरीर की फ़ालतू गर्मी को मिट्टी खींचती है।
- मिट्टी शरीर में ज़रूरी ठंडक पहुंचाती है।
- मिट्टी बदबू और दर्द को दूर करने वाली है।
- ये शरीर में चुम्बकीय ताकत देती है जिससे चुस्ती-फुर्ती और ताकत पैदा होती है।

**मिट्टी के अलग-अलग प्रयोग**

- मिट्टी में सोना - मिट्टी में सोने से नींद ना आना, स्नायु की कमज़ोरी और ख़ून की ख़राबी जैसे रोग समाप्त हो जाते हैं।

- मिट्टी की मालिश - मिट्टी को शरीर पर अच्छी तरह से मलने से और शरीर पर लगाने से ज़हरीले तत्व शरीर से बाहर निकल जाते हैं।
- मिट्टी स्नान - साबुन की जगह शरीर पर मिट्टी लगाकर नहाने से हर तरह के रोगों में लाभ होता है।
- मिट्टी पर नंगे पैर घूमना - मिट्टी पर नंगे पैर घूमने से गुर्दे के रोगों में आराम आता है, आंखों की रोशनी तेज होती है और शरीर को चुम्बकीय ताकत मिलती है।
- मिट्टी की पट्टी - मिट्टी की पट्टी प्राकृतिक चिकित्सा में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है तथा बहुत से रोगों में इसका इस्तेमाल होता है। पेट के हर तरह के रोग में इसका बहुत ही ख़ास स्थान है। इसका इस्तेमाल पेड़ू, पेट, छाती, माथे, आंख, सिर, रीढ़ की हड्डी, गला, पांव, गुदा आदि जहाँ पर भी ज़रूरत पड़े कर सकते हैं।
- मिट्टी की पट्टी बनाने की विधि - मिट्टी को बहुत अच्छी तरह से बारीक पीसकर और छानकर इस्तेमाल से 12 घंटे पहले भिगों दें। इस्तेमाल के समय ज़रूरत के मुताबिक एक बारीक सूती कपड़ा बिछाकर आधा इंच मोटी परत की मिट्टी की पट्टी को फैला दें। शरीर के जिस भाग पर मिट्टी की पट्टी लगानी हो इसे उलटकर लगा दें और ऊपर से किसी गर्म कपड़े से ढक दें। इस पट्टी के लगाने का समय ज़्यादा से ज़्यादा 20 से 30 मिनट तक होना चाहिए नहीं तो मिट्टी द्वारा खींचा गया ज़हर शरीर में दोबारा चला जाता है। जो मिट्टी एक बार इस्तेमाल कर ली गई हो उसे दोबारा इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

- कुदरती उपचार - कुदरती उपचार का मतलब ये है कि कुदरत के बनाए हुए नियमों का पालन करना और कुदरत के तत्वों - पृथ्वी (मिट्टी), जल, सूर्य और वायु का ऐसे इस्तेमाल करना जिससे शरीर में जमा हुआ कूड़ा-करकट बाहर निकल जाए, शरीर शुद्ध बना रहे और शरीर के अंदर की चेतना शक्ति ताकतवर बनी रहे, शरीर के सभी रोग दूर हो और शरीर सही तरह से काम करता रहे।

- पृथ्वी (मिट्टी) - मिट्टी में बहुत ज़्यादा मात्रा में जंतु मौजूद होते हैं। इसलिए गीली मिट्टी को पेट या शरीर के दूसरे हिस्सों पर रखने को कम ही कहा जाता है। हरा रस बनाते समय बची हुई चटनी या सीठी का इस्तेमाल मिट्टी की तरह कर सकते हैं। ऐसी सीठी आंख, पेट या चमड़ी के रोगों वाले हिस्सों पर रखी जा सकती है। उसके सूख जाने पर उसके ऊपर हरा रस छिड़क लें या दूसरी हरी सीठी अथवा चटनी रख लें। हरी सीठी रखने के बाद उस पर सूरज की धूप खाने से बहुत अच्छा नतीजा मिलता है। सफेद दाग, ल्युकोडर्मा, कोढ़ आदि रोगों में सीठी बहुत ही लाभकारी असर करती है।

**विभिन्न रोगों में सहायक**

- **फोड़ा** : सूजन, फोड़ा, अंगुली की विषहरी (उंगुली में ज़हर चढ़ने पर) में गीली मिट्टी का लेप हर आधे घंटे तक बदलते रहने से लाभ होता हैं। फोड़ा बड़ा तथा कठोर हो, फूट न रहा हो तो उस पर गीली मिट्टी का लेप करें। इससे फोड़ा फूटकर मवाद बाहर आ जाती है। बाद में गीली मिट्टी की पट्टी बांधते रहें। मिट्टी की पट्टी या लेप रोग को बाहर खींच निकालता है। मुल्तानी मिट्टी या चिकनी मिट्टी को पीसकर इसकी टिकिया बनाकर फोड़ों पर बांधने से फोड़े ठीक हो जाते हैं।
- कनफेड (कान के नीचे जलन होकर सूजन आ जाना) :-- कनफेड होने पर काली मिट्टी का लेप करने से लाभ होता है।
- **दांतों की मज़बूती :** दांत हिलते हो, टूटने जैसे हो तो चिकनी मिट्टी (चाहे काली हो या लाल) को भिगोकर रोजाना सुबह-शाम मसूढ़ों पर मलने से दांत मज़बूत हो जाते हैं।
- **दांत के दर्द :** साफ़ मिट्टी से रोजाना 3 बार मजंन करने से दांत दर्द ठीक हो जाता है।

- **पायरिया :** साफ़ मिट्टी को पानी में भिगोकर कुछ समय मुंह तक में रखें, फिर थूककर कुल्ले करें। इससे पायरिया व दांतों के रोगी को लाभ होगा। इस प्रयोग के समय मिठाई का सेवन न करें।
- **कब्ज :** पेट पर गीला कपड़ा बिछायें। उस पर गीली मिट्टी का लेप करके मिट्टी बिछायें। इस पर फिर कपड़ा बांधे। रातभर इस तरह पेट पर गीली मिट्टी रखने से कब्ज दूर होगी। मल बंधा हुआ तथा साफ़ आयेगा।
- **सिर दर्द :** गीली मिट्टी की पट्टी को सिर पर रखने से सिर दर्द दूर होता है।
- बिच्छू, बर्र (ततैयां) काटने पर :-- बिच्छू, बर्र (ततैयां) काटने पर गीली मिट्टी की पट्टी बांधने से आराम आता है।
- **ज्वर (बुखार) :** गीली मिट्टी की पट्टी पेट पर बांधें, हर घंटे में बदलते रहें। इससे बुखार की जलन दूर हो जायेगी।
- **प्लीहा वृद्धि (तिल्ली) :** 1 महीने तक गीली मिट्टी पेट पर लगाने से तिल्ली का बढ़ना बंद हो जाता है।
- **रोग-निरोधक :** आमतौर पर लोग बच्चों को एकदम साफ़ माहौल में रखते हैं और गलियों की धूल से बचाकर रखते हैं, जोकि समझदारी नहीं है क्योंकि धूल में पाये जाने वाले कई लाभदायक बैक्टीरिया बच्चों को कुछ रोगों से बचाने में उनकी मदद करते हैं। माताएं अपने बच्चों को धूल-मिट्टी के कणों से बचाकर रखती है। ऐसे रहने वाले बच्चे आगे चलकर एलर्जी व अस्थमा जैसे रोगों से पीड़ित हो जाते हैं।
- **नकसीर :** रात को मिट्टी के बर्तन में आधा किलो पानी मिलाकर उसमें 10 ग्राम मुल्तानी मिट्टी भिगो दें। सुबह इस पानी को छानकर पीने से कुछ ही दिनों में सालों की पुरानी नकसीर ठीक हो जाती है। 1 गिलास पानी में रात को 5 चम्मच मुल्तानी मिट्टी भिगोकर

सुबह पानी छानकर पियें तथा नाक पर मुल्तानी मिट्टी का लेप करें। इससे नाक से ख़ून बहना बंद हो जाता है।

- **पायरिया :** साफ़ मिट्टी को पानी में भिगोकर कुछ समय मुंह में रखकर फिर थूककर कुल्ला करें। इससे पायरिया रोग खत्म हो जाता है।
- **गठिया रोग:** जब घुटनों में दर्द हो तो रात को मिट्टी की पट्टी बांधकर पानी के भाप से घुटने की सिंकाई करें। इससे रोगी को लाभ मिलता है।
- **चेहरे की सुन्दरता :** 1 बड़ा चम्मच मुल्तानी मिट्टी, 3 बड़े चम्मच दही, 1 चम्मच चाय और शहद मिलाकर लेप बना लें। इस लेप को चेहरे पर लगायें। यह लेप त्वचा की गहरी सफाई करता है और त्वचा के बंद रोमकूपों को भी खोलता है जिससे त्वचा की ख़ूबसूरती बढ़ती है। एक टुकड़ा मुल्तानी मिट्टी का लेकर बहुत ही बारीक पीसकर उसका पाउडर बना लें। फिर इस पाउडर में इतना पानी मिला लें कि इस पाउडर की लुगदी (लेप) बन जाए। अब इस लेप को चेहरे पर 15 मिनट तक लगाकर सूखने दें। फिर 15 मिनट के बाद इसे गुनगुने पानी से धो लें। यह प्रयोग सप्ताह में 2 बार करने से चेहरे पर ताजगी छाई रहती है। 1 बड़े चम्मच मुल्तानी मिट्टी में 3 बड़े चम्मच सन्तरे का रस मिलाकर चेहरे पर लगायें। यह लेप त्वचा के दाग-धब्बों को दूर करने में बहुत ही लाभकारी है। इससे त्वचा में जो तैलीयपन होता है वह दूर होता है।
- विसर्प-फुंसियों का दल बनना :-- मुल्तानी मिट्टी को भिगोकर पीस लें और इसमें कपूर मिलाकर शरीर पर लेप करें। फिर 1 घंटे के बाद नहा लें। इससे फुंसियों में बहुत ही लाभ होता है।
- **घमौरियां होने पर :** शरीर पर मुल्तानी मिट्टी का लेप करने से घमौरियां मिट जाती हैं।
- **रंग को निखारने के लिए :** 4 चम्मच मुल्तानी मिट्टी, 2 चम्मच शहद, 2 चम्मच दही और 1 चम्मच नींबू के रस को एक साथ मिलाकर चेहरे पर लगायें और आधे घंटे के बाद हल्के

गर्म पानी से चेहरे को धो लें। फिर एक बर्फ़ का टुकड़ा लेकर पूरे चेहरे पर रगड़ लें। ऐसा करने से चेहरे का रंग साफ़ होता है।

- **बच्चों की नाभि की सूजन :** मिट्टी के ढेले को आग में गर्म करके दूध में बुझा लें फिर उससे नाभि की गर्म-गर्म सिकाई करें। इससे बच्चों की नाभि की सूजन' दूर हो जाती है।
- **नाभि रोग (नाभि का पकना) :** पीली मिट्टी को तेज आग पर गर्म करने के बाद ठण्डा कर लें। उसके बाद उसे दूध में घिसकर बच्चे की नाभि पर लेप करें। इससे नाभि का दर्द ठीक हो जाता है।
- **कण्ठमाला :** मिट्टी के तेल की थोड़ी सी बूंदे बताशे में डालकर छोटे बच्चे को 2 बूंद, 8 से 12 साल तक के बच्चे को 3 बूंदे और 12 साल से ज़्यादा के बच्चे को 4 बूंद खिलाने से कुछ ही दिनों में कण्ठमाला (गले की गांठे) समाप्त हो जाती हैं।

योग और मिट्टी कला का अद्भुत संयोग है। शरीर की बनावट जटिल है। इसमें पाये जाने वाली माँसपेशियाँ, त्वचा, बाल, आँखे हड्डियाँ, रक्त आदि काफी तत्वों से मिलकर बने हैं इनमें कई प्रकार के कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन्स, विटामिन्स, खनिज वसा, पानी व अन्य तत्व शामिल हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे शरीर में 100 प्रकार के प्रोटीन्स 13 प्रकार के विटामिन्स व 14 प्रकार मिनरल्स होते हैं। कुछ तत्व शरीर में ज्यादा ¼मेक्रो न्यूट्रीएन्ट्स तो कुछ बहुत ही सूक्ष्म (माइक्रो न्यूट्रीएन्ट्स) मात्रा में होते हैं पर सबका अपना-अपना महत्व हैं सूक्ष्म मात्रा में पाये जाने वाले तत्व भी उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं जितने कि ज्यादा मात्रा में पाये जाने वाले। इसलिए अच्छे स्वास्थय के लिए इन सभी का शरीर में सन्तुलन होना आवश्यक है।

कार्बोहाइड्रेट्स शरीर के विभिन्न् अंगों को ऊर्जा प्रदान करते हैं जबकि प्रोटीन्स व खनिज विभिन्न अंगों जैसे खून, त्वचा, हड्डियाँ, बाल व अन्य अन्दरूनी अंगों को बनाने का कार्य करते हैं। हमारे शरीर में प्रतिदिन इन अंगों की पुर्नरचना होती रहती है। हमारे शरीर में 200 अरब लाख रक्त कणों का निर्माण होता है और शरीर का पूरा रक्त 120 दिन में परिवर्तित हो जाता है इसी तरह

30 से 90 दिन में हमारी त्वचा नयी बन जाती है। कई विटामिन्स व मिनरल्स उत्प्रेरक का कार्य करते हैं जो भोजन को ऊर्जा में परिवर्तित करते हैं व अंगों के निर्माण में सहायक होते हैं। इस सभी बीमारियों का योग द्वारा इलाज़ संभव है। मिट्टी के बर्तन योग की इस प्रक्रिया में बर्तन के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

# दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (उत्तम नगर, लोनी) का परिचय

उत्तम नगर पश्चिमी दिल्ली की ऐसी जगह है जहाँ कला के सर्वोच्च कला पुरस्कारों से सम्मानित कलाकारों के साथ नए, सीखने वाले तथा जीविका के लिए काम करने वाले मिट्टी के कलाकार रहते हैं। यहाँ रहने वालों मिट्टी कलाकारों की दुनिया बड़ी रोमांचक है। मिट्टी की तमाम ख़ुशबुओं को समेटे उत्तम नगर का कुम्हार ग्राम विश्व पटल पर जाना जाता है। पूरी दुनिया में अपनी खास पहचान के लिए चिन्हित यह कलाकार अपना जीवन सीमित संसाधनों में व्यतीत करते हैं। लगभग बारह हज़ार आबादी वाली यह कॉलोनी अपनी कला के लिए जितनी चर्चित है सरकार और प्रशासन की तरफ से उतनी ही उपेक्षित है। मिट्टी कला द्वारा अपना जीवन-यापन करने वाले कलाकारों का जीवन असुविधा और तनावों के बीच गुजरता है। उनकी अस्मिता खतरे में है। जीवन के रोज़मर्रा की वस्तुओं और सुविधाओं का नितांत अभाव है।

भारतीय परंपरा के वाहक यह मिट्टी के कलाकार बिजली, पानी की सुविधाओं के लिए परेशान राते हैं। इस कुम्हार कॉलोनी के लोगों को सारा काम काम मिट्टी से होता है इसलिए गंदगी की संभावना बनी रहती है। विशेष सफाई की व्यवस्था नहीं है। सीवर लाइन की समस्या विकराल है। आँवा में मिट्टी के बर्तन, खिलौने आदि पकाने के बाद जो राख़ जमा होती है उसे फेकने की सुविधा नहीं है। यहाँ के मिट्टी के बर्तन व मूर्तियाँ पूरे देश में भेजी जाती है। लेकिन मिट्टी का अभाव लगातार इस कला के लिए चुनौती बनता जा रहा है। उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान से लायी गई मिट्टी महंगी पड़ती है जिसका निर्माण भी मंहगा होता है। लगभग पाँच दशक पूर्व सत्तर के दशक में यह कॉलोनी बसनी आरंभ हुई। आज यहाँ कलाकारों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। इस कॉलोनी में रहने वाले अधिकतर कलाकार उत्तर प्रदेश, राजस्थान एवं हरियाणा के हैं जो यहाँ आकार मिट्टी की वस्तुओं का निर्माण करते हैं। तीन दर्जन से अधिक कलाकार राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं। मिट्टी कला के लिए हरकिशन प्रजापति को अंततरराष्ट्रीय 'शिल्प गुरु

सम्मान' से सम्मानित किया जा चुका है। मिट्टी का काम होने के कारण यहाँ कुम्हार गंदगी अधिक होती है लेकिन सरकार की तरफ से कोई सफाई कर्मी यहाँ मौजूद नहीं है। सड़कों का तो नितांत अभाव है। यहाँ तक पहुँचने के लिए ऐसे ही कचरे से होकर गुजरना पड़ता है। बरसात में और बुरा हाल हो जाता है। लोनी तो और भी पिछड़ा इलाका माना जाता है जहां के कलाकार अपनी जीविका के लिए मिट्टी के साथ अन्य कार्य करने को भी विवश हैं।

# मिट्टी कला और कलाकारों चुनौतियाँ

कलाकारों की चुनौतियाँ पहले भी कम थी आज भी कम नहीं हैं बल्कि आज बढ़ गई हैं। दिल्ली के उत्तम नगर, यूपी लोनी, गाजियाबाद, हरियाणा के रोहतक, गुरुग्राम जैसे इलाकों में कुम्भकारों की संख्या बहुत अधिक है। इनमें से कुछ तो मिट्टी के वर्तनों, खिलौने आदि का निर्माण आज भी करते हैं। कुम्भकारों की चुनौतियाँ लागातर बढ़ती जा रही हैं। यह कलाकार अपनी खून-पसीने की मेहनत से बर्तन तैयार करते हैं। सबसे पहले तो मिट्टी का अभाव शहरों में बहुत हैं। बढ़ती आबादी के कारण भवनों के निर्माण ने मिट्टी निकलने वाले स्थानों को भी नहीं छोड़ा। पहले जहाँ इस कला के सम्मान के लिए

समय के साथ बढ़ती आबादी के कारण इन कलाकारों के लिए मिट्टी का अभाव बढ़ता ही गया। मिट्टी के बर्तन, दीपक, मूर्तियां, सजावट के समान आदि निर्मित करने के लिए जो लड़की, कंडी पहले एक या दो रुपए किलो मिलती थी उसकी कीमत अब बढ़ाकर पाँच से दस रुपए किलो कर दी गई है। जबकि आज भी लोग उम्मीद करते हैं कि मिट्टी के समान सस्ते ही मिलें। मटके, दीपक, पानी के घड़े, खिलौने जैसी पारंपरिक वस्तुओं के अलावा यहाँ के कलाकार डिज़ाइनर बर्तन, टेराकोटा बर्तन, घरों में सजने वाली डिज़ाइनर मूर्तियाँ आदि भी बनाते हैं। प्लास्टिक की वस्तुओं का आगमन मिट्टी कुल्हड़, गमले, घड़े, सुराही, दीये आदि के लिए भारी चुनौती बनकर उभरे हैं।

एशिया की सबसे बड़ी कुम्हार कॉलोनियों में शामिल यह कॉलोनी आज भी कई समस्याओं से गुजर रही है। परंपरागत चाक, भट्टी आदि का इस्तेमाल किया कर मिट्टी की वस्तुओं का निर्माण करने वाले कलाकार आज भी उपेक्षा के शिकार हैं।

# उद्देश्य

“परियोजना का विषय “दिल्ली के मिट्टी कलाकारों का प्रलेखन” रखने के पीछे यही सोच है कि है कि ये हमारी प्राचीन “अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा है” जो अब बाज़ार के प्रभाव से हाशिये पर है। कुंभकार समाज हमारे भारतीय समाज की संस्कृति, सभ्यताओं और परंपराओं से गहराई से जुड़े हुए हैं। जहाँ कई कुम्हार परिवार कई पीढ़ियों से चाक पर अपनी कलाएँ हमें परोसा करते थे। बहुत नाज़ुक होते है चाक पर बने ये मिट्टी के पात्र, ज़रा सा झटका लगता है और गिरकर चकनाचूर हो जाते हैं। लकिन साधारण मिट्टी को इस रूप तक लाने में कुम्हारों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है आप जानते हैं, पहले मिट्टी को एक गड्ढे में पानी से भरा जाता है। दूसरे दिन मिट्टी का गारा बनाया जाता है, इसमें से कंकड़-पत्थर आदि निकाले जाते हैं। गारे को गूँथकर मुलायम बनाया जाता है अंत में चाक पर मटका आदि बनाया जाता है। सुराही के लिए फर्मे का इस्तेमाल किया जाता है। जब मटका, सुराहिया कोई भी अन्य मिट्टी का बर्तन धूप में सूख जाता है, तब इन कच्चे बर्तनों को भट्टी में पकाया जाता है।

मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन और प्रलेखन करने का पहला उद्देश्य हमारे भारतीय समाज के सांस्कृतिक विस्तार में योगदान के लिए उनकी कला का सम्मान करना है। उनकी समस्याओं और चुनौतियों को समझना। हम जिस दौर में जी रहे हैं वह हमारे स्वास्थ्य और दिमाग दोनों के लिए अच्छा नहीं है। हम लगातार महसूस कर रहे हैं की हमारी क्षमता और आयु दोनों घट रहे हैं। मिट्टी इस समस्या का समाधान हो सकती है।

इस परियोजना को विस्तार दें तो यह पूरे भारत के मिट्टी कलाकारों को जोड़कर मिट्टी के बर्तनों, खिलौनों आदि का एक बहुत बड़ा केंद्र तैयार किया जा सकता है। जो कुंभकार समाज को आर्थिक लाभ तो देगा ही समाज को स्वास्थ्य और ऊर्जा भी देगा।

# आधुनिक मिट्टी के बर्तन  की तस्वीरें

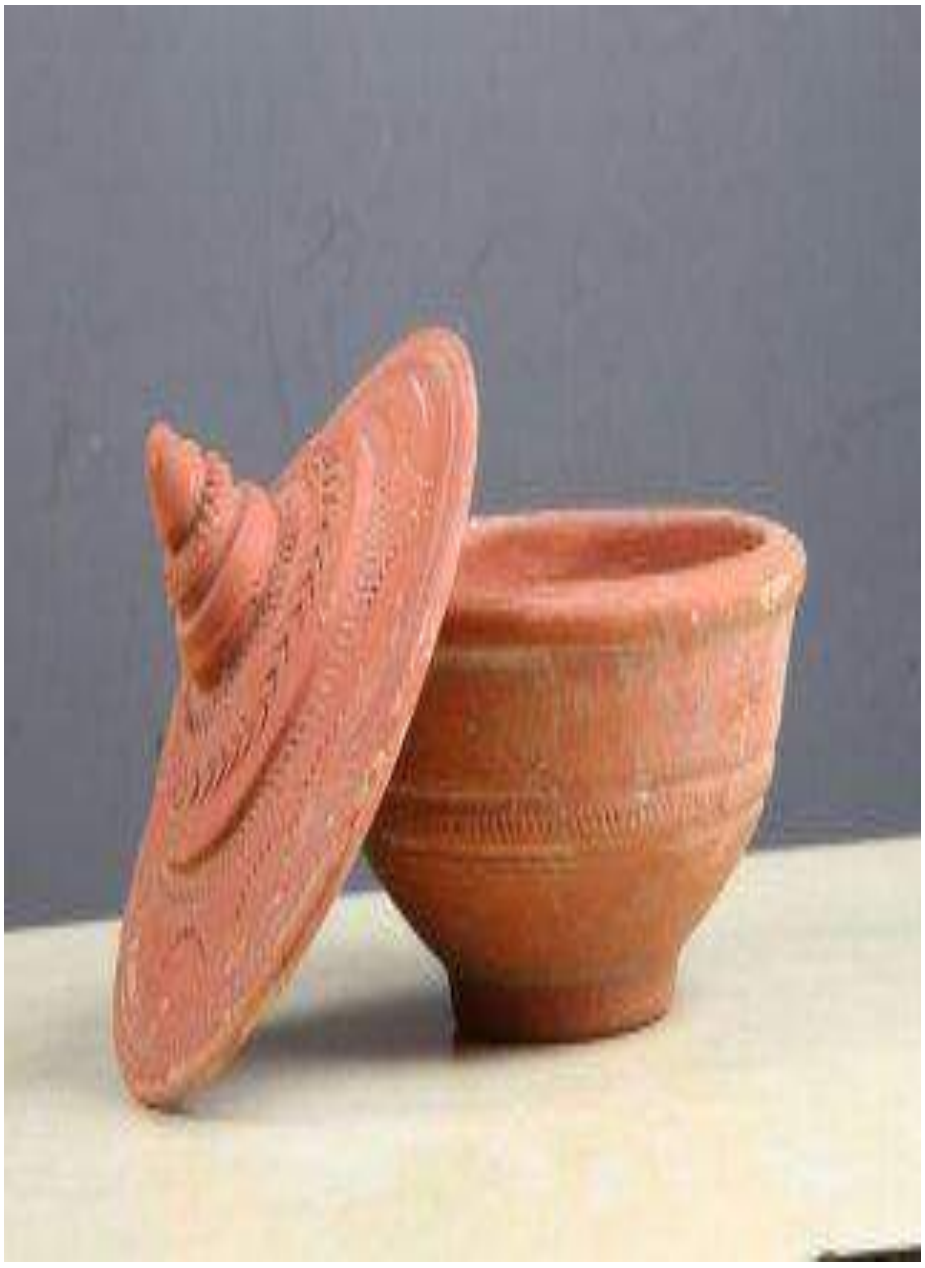

STRONG

# मिट्टी कला से जुड़े राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की कुछ तस्वीरें

# संगीत नाटक अकादेमी, दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा के अंतर्गत परियोजना

## दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कुम्हारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

(28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16)

# कलाकारों का डाटा

**फ़ाइनल रिपोर्ट**

**प्रस्तुति : अंकिता चौहान**

# संगीत नाटक अकादेमी, दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा के अंतर्गत परियोजना

# दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कुम्हारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

(28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

दिल्ली स्थित उत्तम नगर की प्रजापत कॉलोनी मिट्टी कला के लिए विश्व भर में जानी जाती है। यहाँ के कलाकार अपनी कला की उत्कृष्टता के कारण कई सम्मनों से सम्मानित किए जा चुके हैं। मिट्टी के बर्तन, खिलौने, सजावट के समान आदि कलाओं मेंइस कॉलोनी से एक से बढ़कर एक प्रतिभाओं ने देशविदेश में नाम कमाया है। यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी निखरती ही जा रही है। लेकिन दुर्भाग्यवश यह है कि इस प्राचीन कला को अभी तक संरक्षित नहीं किया गया। यहाँ के कलाकार मिट्टी कला को जीवित रखने के लिए जी-तोड़ मेहनत करते हैं लेकिन उनके बच्चों की शिक्षा और परिवार का पालन पोषण खतरे में है। यह समाज लगातार जीवन की बुनियादी जरूरतों के लिए संघर्ष करता नज़र आता है। सरकार द्वारा भट्टियों को बंद करवाए जाने के कारण इनके सामने जीविका की मुश्किलें खड़ी हो गई हैं। मिट्टी के बर्तनों को पकाने के लिए यहां जो भट्ठी जलाई जाती है, उसमें ईधन के तौर पर लकड़ी के बुरादे का इस्तेमाल होता है। शाम के समय जब भट्ठी जलती है तो आसमान में धुआं छा जाता है। भट्ठी पूरी रात जलती है। एकदो कुंभकार को छोड़ दें तो अधिकांश इसी भट्ठी का इस्तेमाल करते हैं। इस भट्ठी के विकल्प के रूप में गैस या बिजली आधारित भट्ठी मौजूद है, लेकिन इसकी कीमत इतनी अधिक है कि हर कुंभकार के लिए इसे खरीद पाना संभव नहीं है। उनकी मांगहै कि यह भट्ठी रियायती दरों पर किश्तों में उपलब्ध कराई जाए। कुंभकारों का कहना है कि अब तक कई बार सरकारी एजेंसियों की ओर से पर्यावरण का हवाला देकर उन्हें परेशान किया जाता है। सरकार द्वारा

इलेक्ट्रानिक भट्ठियों की सुविधा नहीं होने के कारण और मंहगा होनेके कारण यह समाज अपने काम को बंद करने की कगार पर है। इलेक्ट्रानिक भट्ठियों को चलाने में बिजली की भारी खपत होती है जिससे यह समाज उसका उपयोग नहीं कर पाता। मिट्टी के बर्तन, मूर्तियाँ, खिलौने आदि सस्ते दामों पर बिकते हैं। इसलिए बिजली के यंत्र उपयोग करना संभव नहीं है। भारतीय संस्कृति की प्रतीक इस कला के कलाकारों के सामने यह संकट दुखद है। गत महीने जब इनके डाटा संचयन के लिए मैं इनसे मिली तो इनकी हालत देखकर मन दुखी हुआ। मेरी सरकार से अपील है इनकी समस्या परध्यान दे जिससे उनकी जीविका का समाधान हो सके। अब तक की पीढ़ी ने तो इस कला को अपने से बड़ों के निरीक्षण में सीखा और उसमें काफी कुछ जोड़ा भी, लेकिन मौजूदा और आने वाली पीढ़ी इस कला को कब तक जीवित रख पाएगी, इस बात को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। इसका कारण मिट्टी कला के लिए जरूरी भट्ठी से निकलने वाले धुएं का लगातार विरोध होना है।

मैंने अपने शोध के अनुसार कलाकारों का डाटा प्रस्तुत कर रही हूँ।

**धन्यवाद**

**अंकिता चौहान**

संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : सुभाषचन्द

पिता का नाम : श्री दयाचन्द

जन्मतिथि : 2/5/1977

शिक्षा : 6वीं पास

कार्य का अनुभव : 30 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-A-152 प्रजापत कालोनी इन्द्रा पार्क
: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059
:

सुभाषचन्द

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : सतीश कुमार

पिता का नाम : लालमन

जन्मतिथि : 4/4/1979

शिक्षा : 9वी पास

कार्य का अनुभव : 32 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

पता : RZ-A51 A-151 पुजापत कालोनी
उत्तम नगर नई दिल्ली- 110059

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : पूनम

पति/पत्नि का नाम : अशोक कुमार

जन्मतिथि : 1984

शिक्षा : 8 वी

कार्य का अनुभव : 19 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

पता : RZ-296 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर
नई दिल्ली- 110059

पूनम

हस्ताक्षर

7011513404

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : दयाचन्द

पिता का नाम : तुलाराम

जन्मतिथि : 15/3/1950

शिक्षा : 9वी

कार्य का अनुभव : 50 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-A-152 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

Daya Chand

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : आदराम

पिता का नाम : श्री धन्नाराम

जन्मतिथि : 20/2/1971

शिक्षा : 8 वी

कार्य का अनुभव : 35 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : ———

:

:

:

:

पता : R2-177 प्रजापत कालोनी इन्दा पार्क

: उत्तम नगर नई दिल्ली – 110059

:

9210836571

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

# 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : रवि कुमार

पिता का नाम : श्री परमानन्द

जन्मतिथि : 14/1/1989

शिक्षा : 12 वी

कार्य का अनुभव : 15 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-B-309 प्रजापत कालोनी उत्तम
: नगर नई दिल्ली - 110059
:

8076855309

Ravi Kumar

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : परमानन्द

पिता का नाम : तुलेराम

जन्मतिथि : 1950

शिक्षा : 5वी

कार्य का अनुभव : 40 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-B- 309 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

परमानन्द

हस्ताक्षर

9125945204

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : जगदीश कुमार

पिता का नाम : लालमन

जन्मतिथि : 1982

शिक्षा : 8 वी

कार्य का अनुभव : 20 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

पता : RZ-A-151 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर
: नई दिल्ली - 110059

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : महावीर सिंह

पिता का नाम : श्री दयाचन्द

जन्मतिथि : 14/8/1983

शिक्षा : 6 वीं

कार्य का अनुभव : 22 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-A-152 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

महावीरसिंह

हस्ताक्षर

[illegible]91620529

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

### 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : दुर्गा देवी

पति) पिता का नाम : बलदेव सिंह

जन्मतिथि : 1975

शिक्षा : N/A

कार्य का अनुभव : 36 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-153 इन्द्रा पार्क प्रजापत कालोनी

: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059

:



हस्ताक्षर

8076617098

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : धर्मवीर

पिता का नाम : परमानन्द

जन्मतिथि : 21/1/1993

शिक्षा : M. Com

कार्य का अनुभव : 10 साल

सम्मान/पुरस्कार : ——

:

:

:

:

पता : RZ-B-309 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

हस्ताक्षर

8178810800

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : मामचन्द

पिता का नाम : बनवारी लाल

जन्मतिथि : 1/8/1980

शिक्षा : 8वीं पास

कार्य का अनुभव : 30 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-322 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

मामचन्द

हस्ताक्षर

9711457544

संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : कालूराम

पिता का नाम : हरफूलराम

जन्मतिथि : 1954

शिक्षा : ~~Not~~ N/A

कार्य का अनुभव : 35 साल

सम्मान/पुरस्कार : ———

:

:

:

:

पता : RZ-313 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

कालूराम

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

### 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : कविता

पति ~~पिता~~ का नाम : मदनलाल

जन्मतिथि : 1976

शिक्षा : 9वी

कार्य का अनुभव : 25 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-177 इन्द्रापार्क प्रजापत कालोनी

: उत्तम नगर नई दिल्ली-110059

:

कविता

हस्ताक्षर

9268212664

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : बनीता

पिता का नाम : मीचन्द

जन्मतिथि : 1/1/1975

शिक्षा : 5 वी

कार्य का अनुभव : 25 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ- 177 प्रजापत कालोनी इन्द्रा पार्क

: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059

:

बनीता

हस्ताक्षर

9210836571

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

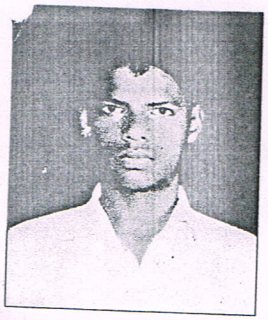

कलाकार का नाम : रोहित

पिता का नाम : मदनलाल

जन्मतिथि : 7/3/1998

शिक्षा : 12वीं

कार्य का अनुभव : 3 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : R2-177 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

रोहित

हस्ताक्षर

9212152066

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : बलदेव सिंह

पिता का नाम : चिरंजी लाल

जन्मतिथि : 1972

शिक्षा : 7 वी

कार्य का अनुभव : 45 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

पता : R2-153 इन्द्रा पार्क प्रजापत कालोनी
इन्दर नगर नई दिल्ली

बलदेव सिंह
हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : रामरती

पिता का नाम : राम अवतार

जन्मतिथि : 1977

शिक्षा : नौवी

कार्य का अनुभव : 23

सम्मान/पुरस्कार :

:

:

:

:

पता : R-Z-176 प्रजापत कालोनी

:

: इन्द्रा पार्क उत्तम नगर N.D 59

हस्ताक्षर

रामरती

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : रामअवतार

पिता का नाम : मातुराम

जन्मतिथि : 8.2.1974

शिक्षा : 10th

कार्य का अनुभव : 40 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : R.Z 176 प्रजापत कालोनी इन्द्रा पार्क

: उत्तम नगर नई दिल्ली 110059

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

### 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : Jadeepeet kumar

पिता का नाम : Baldev Singh

जन्मतिथि : 15/1/1994

शिक्षा : 12th

कार्य का अनुभव : 5 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : R2-153 Indra park Paypat colony

: Uttam Nagar N.D-59

:

Jadeepekt

हस्ताक्षर

...617098

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

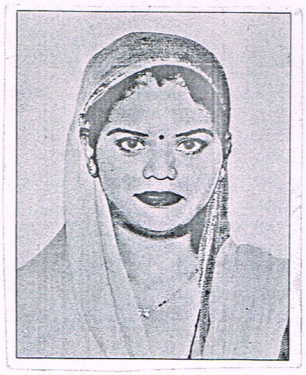

कलाकार का नाम : मंजू

पिता का नाम : प्रेमचन्द

जन्मतिथि : 2/4/1994

शिक्षा : 12वीं

कार्य का अनुभव : 7 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-177 प्रजापत कालोनी इन्द्रा पार्क

: उत्तम नगर नई दिल्ली- 110059

:

मंजू

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : भारती

पिता का नाम : लीलूराम

जन्मतिथि : 7/6/1993

शिक्षा : 12वीं

कार्य का अनुभव : 3 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-177 प्रजापत कालोनी इन्द्रा पार्क

: उत्तम नगर नई दिल्ली- 110059

:

भारती

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : ऊर्मिला

पति/पत्नी का नाम : स्व. राजू

जन्मतिथि : 1/1/1980

शिक्षा : 8 वीं

कार्य का अनुभव : 30 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : R2-294-A इन्दिरा पार्क प्रजापत कालोनी

: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059

:

ऊर्मिला

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : सोनिया

पिता का नाम : स्व. राजू

जन्मतिथि : 25/2/2000

शिक्षा : 3rd year (Graduation)

कार्य का अनुभव : 10 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

पता : RZ-294-A इन्द्रा पार्क प्रजापत कालोनी
: उत्तम नगर नई दिल्ली – 110059

Sonia
हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : गंगा देवी

पति ~~पिता~~ का नाम : प्रभुदयाल

जन्मतिथि : 1/1/1968

शिक्षा : 5 वी

कार्य का अनुभव : 50 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-287 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: न. दि. - 110059

:

हस्ताक्षर

गंगा देवी

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

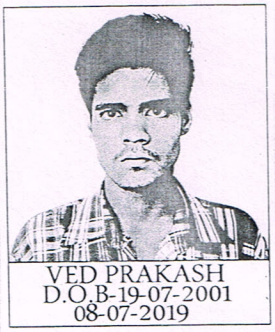


28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : वेदप्रकाश

पिता का नाम : प्रभुदयाल

जन्मतिथि : 2001

शिक्षा : 10वीं

कार्य का अनुभव : 6 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-287 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली – 110059

:

वेदप्रकाश

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : राजू कुमार

पिता का नाम : श्री गिरिराज

जन्मतिथि : 20/6/1989

शिक्षा : 8वी

कार्य का अनुभव : 8 साल

सम्मान/पुरस्कार : ——

:

:

:

:

पता : RZ-323 4 इन्द्रा पार्क प्रजापत कालोनी

: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059

:

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : राजेश कुमार

पिता का नाम : प्यारीराम

जन्मतिथि : 23/10/1987

शिक्षा : 9वी पास

कार्य का अनुभव : 15 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-296 प्रजापत ~~कालो~~ नन्दराम पार्क

: प्रजापत कालोनी उत्तम नगर नई दिल्ली -

: 110059

9953526312

Rajesh

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : महेन्द्र कुमार

पिता का नाम : यादराम

जन्मतिथि : 1/12/1999

शिक्षा : 9वी

कार्य का अनुभव : 10 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-177 प्रजापत कालोनी इन्द्रा पार्क

: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059

:

महेन्द्र

हस्ताक्षर

8076463176

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : अंजू

पिता का नाम : राधेराम

जन्मतिथि : 4/3/1998

शिक्षा : 10 वी

कार्य का अनुभव : 10 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

पता : RZ-177 प्रजापत कालोनी इन्द्रा पार्क
: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059

9210836571

अंजू
हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : कीर्ति

पिता का नाम : स्व. राजू

जन्मतिथि : 28/2/2004

शिक्षा : 11th

कार्य का अनुभव : 6 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-294 इन्द्रा पार्क प्रजापत कालोनी

: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059

:

Kirti

हस्ताक्षर

95407250179

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : गुड्डी

पिता का नाम : चन्द प्रजापति

जन्मतिथि : 1970

शिक्षा : N/A

कार्य का अनुभव : 35 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : Merchandises (QP No.- HCS/Q9801)
: (Skill India)
:
:
:

पता : RZ-177 प्रजापत कालोनी इन्द्रा पार्क
: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059
:

गुड्डी

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दल्ला एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : सुशीला देवी

पिता का नाम : लाल सिंह

जन्मतिथि : 21 फरवरी 1981

शिक्षा :

कार्य का अनुभव : मिट्टी के सभी तरह के कार्य करती हूं। (25 वर्ष)

सम्मान/पुरस्कार :

:

:

:

:

पता : RZ- 175 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

सुशीला
हस्ताक्षर

9911973830

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : राजकुमार

पिता का नाम : जगपतराम

जन्मतिथि : 1961

शिक्षा : 6 वीं

कार्य का अनुभव : 40 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-298 मजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

राजकुमार

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : ~~[illegible]~~ सावित्ा देवी

~~पिता~~ पति का नाम : राजकुमार

जन्मतिथि : 26/1/1979

शिक्षा : 9 वी

कार्य का अनुभव : 25 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ- 298 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: न. दि. - 110059

:

सावित्ा देवी

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : प्रेमचन्द

पिता का नाम : प्रभुदयाल

जन्मतिथि :

शिक्षा : 11वीं

कार्य का अनुभव : 7 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-287 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 59

:

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : सावित्री

पति/पिता का नाम : राजेश

जन्मतिथि : 1996

शिक्षा : 10 वी

कार्य का अनुभव : 5 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-287 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: न. दि. — 59

:

Savitri

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : कुम्हार कुन्दन कुमार

पिता का नाम : कन्हैयालाल

जन्मतिथि : 21/11/1994

शिक्षा : 8वी

कार्य का अनुभव : 15 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : ——

:

:

:

:

पता : RZ-177 प्रजापत कालोनी इन्दिरा पार्क

: उत्तम नगर नई दिल्ली- 110059

:

कुन्दन

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

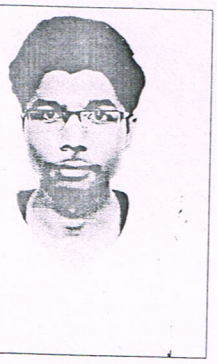

कलाकार का नाम : मनीष कुमार

पिता का नाम : राजकुमार

जन्मतिथि : 9/10/1998

शिक्षा : ~~B.A~~ ~~म~~ 12वी

कार्य का अनुभव : 15 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-298 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: न. दि. - 110059

:

मनीष कुमार

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : अशोक कुमार

पिता का नाम : लीलूराम

जन्मतिथि : 10/10/1978

शिक्षा : 8 वी

कार्य का अनुभव : 25 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : ......

: ......

: ......

: ......

: ......

पता : RZ-296 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

: ......

अशोक कुमार

हस्ताक्षर

9250661241

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन



28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : वीर सिंह

पिता का नाम : मातू राम

जन्मतिथि : 1970

शिक्षा : 10वीं

कार्य का अनुभव : ५० वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-176 प्रजापत कालोनी इन्द्रा पार्क

: उत्तम नगर न. दि. - 110059

:

वीर सिंह

हस्ताक्षर

0599

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : फूलकुमारी

पति/पिता का नाम : वीर सिंह

जन्मतिथि : 1974

शिक्षा : —

कार्य का अनुभव : 40 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

पता : RZ-176 प्रजापत कालोनी इन्द्रा पार्क
इन्द्रम नगर नई दिल्ली - 110059

फूलकुमारी

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली' एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

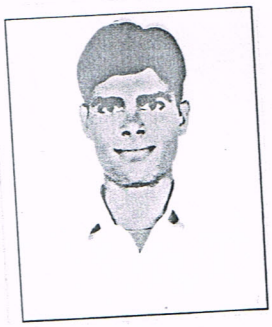



कलाकार का नाम : सुरेश

पिता का नाम : कालूराम

जन्मतिथि : 1984

शिक्षा : Graduation

कार्य का अनुभव : 15 साल

सम्मान/पुरस्कार : ——

पता : RZ-313 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर
नई ~~नई~~ दिल्ली -110059

Suresh
हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : लीला राम

पिता का नाम : रतन लाल

जन्मतिथि : 1973

शिक्षा : 8 वी पास

कार्य का अनुभव : मिट्टी के डिज़ाइनदार बरतन बनाने का अनुभव

सम्मान/पुरस्कार : —

पता : RZ-313 इन्दिरा पार्क प्रजापत कालोनी
उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059

लीलाराम

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : महेन्द्र कुमार

पिता का नाम : श्री किशनलाल

जन्मतिथि : 26 फरवरी 1977

शिक्षा : 5वीं पास

कार्य का अनुभव : मिट्टी के सभी तरह के बरतन बनाने का अनुभव प्राप्त है। (30 वर्ष)

सम्मान/पुरस्कार :

पता : RZ-175 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : देवानंद

पिता का नाम : लीलाराम

जन्मतिथि : 13/8/1995

शिक्षा : Graduation

कार्य का अनुभव : मिट्टी के डिजाइनदार बरतन बनाने का अनुभव

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-313 इन्दिरा पार्क प्रजापत कॉलोनी

: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059

:

Deva

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

### 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : कविता

पिता का नाम : महेन्द्र कुमार

जन्मतिथि : 15 दिसंबर 1998

शिक्षा : B.A 3rd year (Graduation)

कार्य का अनुभव : मिट्टी के सभी तरह के ~~बरतन~~ बनाने का अनुभव है। (15 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : ———

:

:

:

:

पता : RZ-175 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर नई दिल्ली -110059

:

Kavita
हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : तुलसी

पिता का नाम : महेन्द्र कुमार

जन्मतिथि : 3 सितंबर 2000

शिक्षा : B.A 2nd year (Graduation)

कार्य का अनुभव : मिट्टी के बरतन बनाने लायक बनाना तथा मिट्टी के बरतन बनाने का अनुभव (12 वर्ष)

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-175 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

Tulsi
हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : मनोज कुमार

पिता का नाम : बलदेव सिंह

जन्मतिथि : 04/7/1993

शिक्षा : 12th Pass

कार्य का अनुभव : 5 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : D2 153 इंदिरा पार्क प्रजापत कालोनी

: उत्तम नगर N.D-59

:

Mb: 8076617098

मनोज कुमार

हस्ताक्षर

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

### 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : मदनलाल

पिता का नाम : श्री धन्नाराम

जन्मतिथि : 20/4/1972

शिक्षा : 10 वीं

कार्य का अनुभव : 40 ~~साल~~ वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : क्षेत्रीय डिजाइन व तकनीकी विकास केन्द्र
: प्रशिक्षण एवं दक्ष शिल्पी प्रशिक्षण कार्यक्रम
: मे दिनांक 8.3.1999 से 19.3.1999 तक
: प्रशिक्षण प्राप्त किया।
:

पता : R2-177 इन्द्रा पार्क प्रजापत कालोनी
: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059
:

मदन लाल

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : अलका

पिता का नाम स्व. राजू

जन्मतिथि : 8/8/2001

शिक्षा : 2nd year (Graduation)

कार्य का अनुभव : 8 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

पता : RZ-294-A इन्द्रा पार्क पालम कालोनी

: उत्तम नगर न. दि. -59

अलका

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : राजेश

पिता का नाम : प्रभुदयाल

जन्मतिथि : 1991

शिक्षा : 6 वी

कार्य का अनुभव : 10 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-287 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: न. दि. - 110059

:

हस्ताक्षर राजेश कुमार

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : राहुल

पिता का नाम : राजकुमार

जन्मतिथि : 15/3/1998

शिक्षा : 3rd year (Graduation)

कार्य का अनुभव : 18 वर्ष

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-298 प्रजापत कालोनी इन्द्रम नगर

: नई दिल्ली - 59

:

राहुल कुमार

हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : मीनाक्षी देवी

पिता का नाम : मनोज कुमार

जन्मतिथि : 11/11/1994

शिक्षा : 12वी पास

कार्य का अनुभव : 1 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : R2-153 INDRA PARK D.C

: U.T.N.D-59

:

Meenakshi
हस्ताक्षर

# संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : मुकेश कुमार

पिता का नाम : धनीराम

जन्मतिथि : 25/12/1989

शिक्षा : 9 वी

कार्य का अनुभव : 15 साल

सम्मान/पुरस्कार :

:

:

:

:

पता : RZ- 296 A नन्दराम पार्क प्रजापत कालोनी

: उत्तम नगर नई दिल्ली - 110059

:

हस्ताक्षर

Mukesh Kumar

## संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली

द्वारा 'भारत की अमूर्त सांस्कृतिक संपदा' के अंतर्गत परियोजना

## 'दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मिट्टी कलाकारों का डाटा संचयन एवं प्रलेखन

28-6-ICH/SCHEME/18/2015-16

कलाकार का नाम : लालमन

पिता का नाम : गंगासार

जन्मतिथि : 1946

शिक्षा : 5वी

कार्य का अनुभव : 50 साल

सम्मान/पुरस्कार : —

:

:

:

:

पता : RZ-A-151 प्रजापत कालोनी उत्तम नगर

: नई दिल्ली - 110059

:

लालमन

हस्ताक्षर